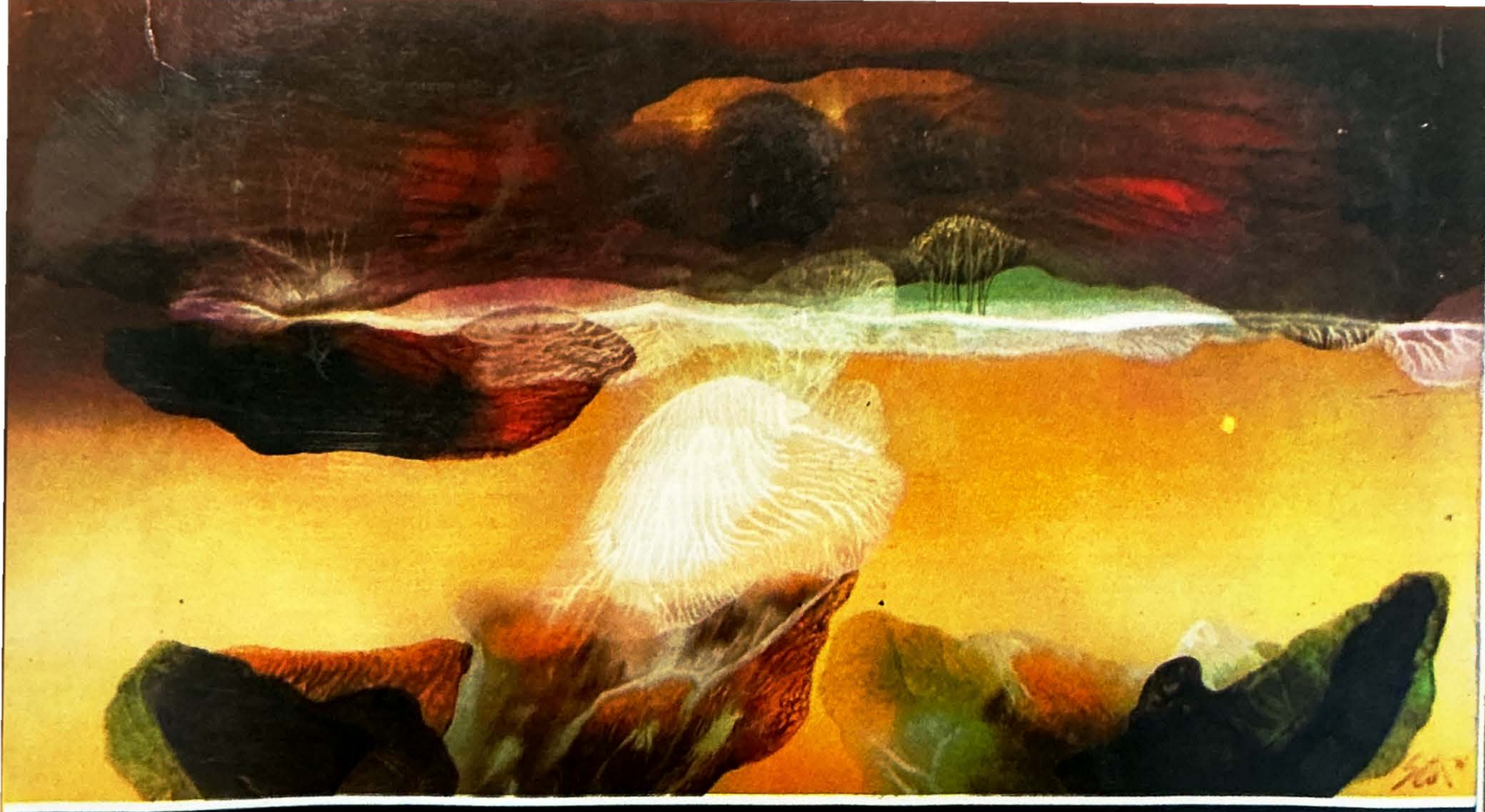

दीर्घा

उत्कर्ष प्रतिष्ठान, लखनऊ

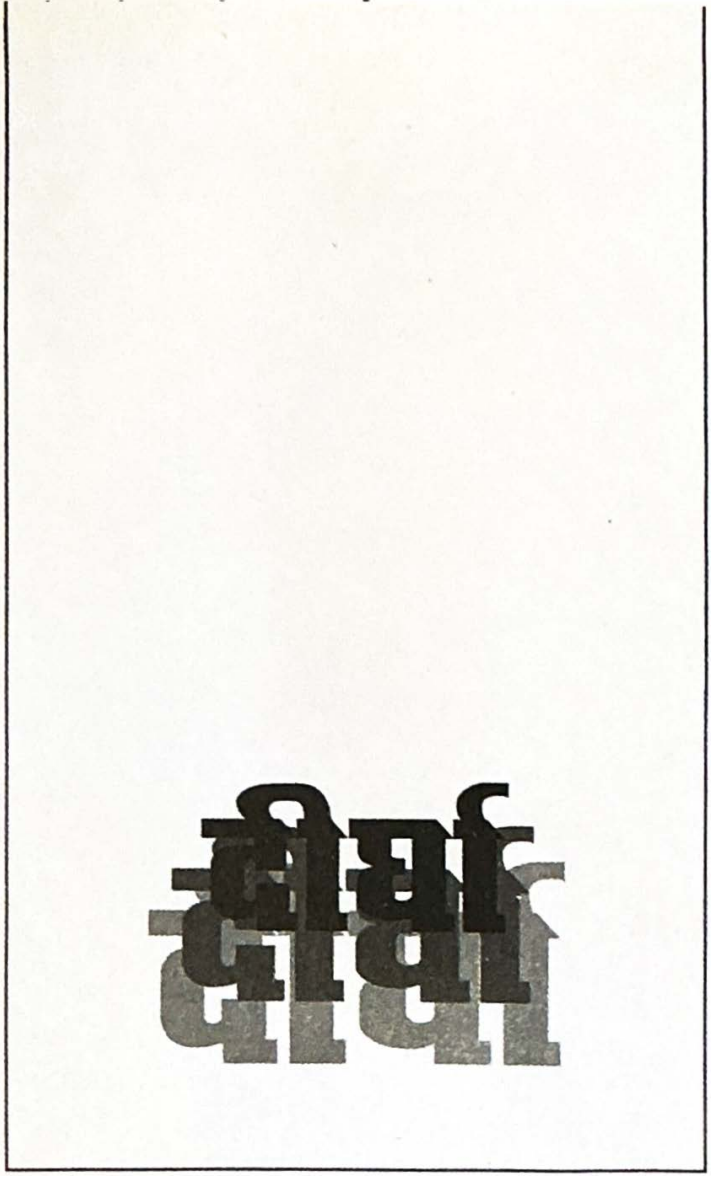

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अक्टूबर 2000

उत्कर्ष प्रतिष्ठान, लखनऊ

दीर्घा

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अक्टूबर 2000

रेखांकन– नित्यानन्द महापात्र

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
"दीर्घा" का प्रकाशन वर्ष में दो बार अक्टूबर तथा अप्रैल माह में किया जाएगा।

संपादक
अवधेश मिश्र

संपादकीय कार्यालय
12/179, इन्दिरा नगर, लखनऊ – 226016
दूरभाष : 0522-358007, 359026

सह–संपादक
डा. शेफाली भटनागर

आवरण सज्जा
एस. जी. श्रीखण्डे

मुख पृष्ठ चित्र
आर. बी. सेठ
स्वप्न अभियास, जलरंग, 90 x 70 सेमी., एक्से.नं. 98-925-1
राज्य ललित कला अकादमी, उ.प्र. के सौजन्य से

ले–आउट
अवधेश मिश्र

प्रस्तुति सहायक
साहब बक्श, सर्वेश मिश्र

मूल्य : रुपये 100 मात्र

प्रकाशक
श्रीमती अंजू सिन्हा

प्रकाशन कार्यालय
उत्कर्ष प्रतिष्ठान, 1/95, विनीत खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ
दूरभाष : 0522-393745

मुद्रक
प्रकाश पैकेजर्स, 257–गोलागंज, लखनऊ–226018

दीर्घा

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अक्टूबर 2000

योगेन्द्र नारायण
मुख्य सचिव

दूरभाष : का. 221599, 238212
फैक्स : 0522-239283
उत्तर प्रदेश शासन
सचिवालय, एनेक्सी भवन,
लखनऊ – 226001
e-mail : csup@lw1.vsnl.net.in

दि : 12.9.2000

संदेश

'उत्कर्ष प्रतिष्ठान', कला क्षेत्र में अपनी नियमित गतिविधियों के माध्यम से रचनात्मक योगदान देते हुए जन–सामान्य में कला अभिरुचि जागृत करने के साथ ही अनेक कलाकारों को स्थापित करने का श्रेय प्राप्त कर चुका है, विशेषकर युवा कलाकारों को। प्रसन्नता है कि अब, कला के सैद्धांतिक पक्ष को भी एक नया आयाम देने के लिए 'दीर्घा' षटमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ कर संस्थान ने विशिष्ट कार्य किया है। इस उल्लेखनीय कार्य के लिए पत्रिका से संबंधित पूरी टीम को बधाई।

आशा है कि पत्रिका के नियमित प्रकाशन से कला क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों, परिवर्तित होती प्रवृत्तियों तथा सौंदर्यशास्त्रीय मूल्यों से परिचित हो कला–समाज व जन–सामान्य लाभान्वित होंगे और मौलिक कला–साहित्य के अभाव की पूर्ति हो सकेगी।

(डा. योगेन्द्र नारायण)

रेखांकन, 1963 – वीरेन्द्र सिंह राही

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अक्टूबर 2000

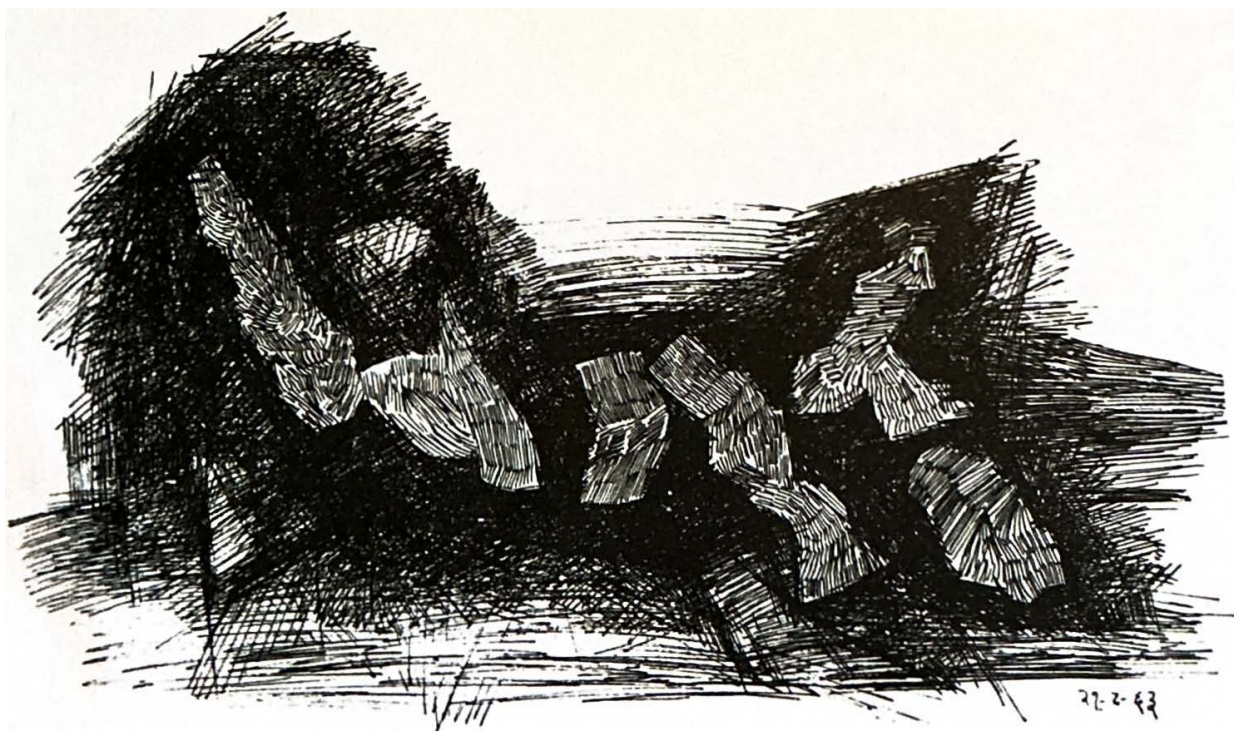

रेखांकन– रामकुमार, ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित मोनोग्राफ से

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अक्टूबर 2000

अनुक्रम

सम्पादकीय		7
मिथिला की लोक चित्र शैली	*प्रो. श्याम शर्मा*	9
भारतीय कला संस्कृति एवं शिक्षा	*डॉ. गोपाल मधुकर चतुर्वेदी*	17
आरम्भिक मेवाड़ी एवं बूंदी रागमाला चित्र	*डॉ. राका अग्रवाल*	23
कला में यथार्थ और अमूर्तन	*डॉ. शेफाली मटनागर*	29
SANJH: it is an Art of Village Women	*Dr. H.N. Mishra*	35
कला, विचार की सशक्त अभिव्यक्ति	*डॉ. सुषमा राय*	39
मनोहर कौल	*डॉ. किरन प्रदीप*	43
कला रसास्वादन : आधुनिक चित्रकला के संदर्भ में	*डॉ. सविता नाग*	51
VISUAL ART : Significance Synthesis and Changeability	*Dr. Vinod Indurkar*	55
कुमाऊंनी लोक कला में अंकित अभिप्राय (मोटिफ)	*डॉ. कृष्णा बैराठी*	61
लखनऊ के सैरां चित्रकार	*अवधेश मिश्र*	69
आधुनिक कला आन्दोलन	*प्रो. चिन्मय मेहता*	79

रेखांकन– बद्रीनाथ आर्य

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अक्टूबर 2000

रेखांकन– धीरज चौधरी, ललित कला कन्टम्पोरी – 29, ललित कला अकादमी नई दिल्ली से साभार

दीर्घा

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अक्टूबर 2000

सम्पादकीय

आज उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते वर्चस्व से निश्चय ही हमें अपनी मौलिकता के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम आधुनिकता या समकालीन परिवेश को अनदेखा करें, बल्कि इसके साथ ही अपने उत्स को ध्यान में रखें। भारतीय समकालीन कला वातावरण हो या भूमण्डलीय, परिवर्तन सर्वत्र समान ही है और इसे एक निश्चित मापक से न तो मूल्यांकित किया जा सकता है न ही व्याख्यायित या विश्लेषित। कला–बाज़ार के अनुरूप ही कला–कर्म और प्रवृत्तियाँ अपनी दिशा निर्धारण कर रही हैं। यह केवल रचनाकारों और समीक्षकों की संवेदनहीनता का ही परिणाम है, जो खरीदारों को लुभाने में अधिक सचेष्ट हैं, बजाय मौलिक/वैचारिक सृजन के। सर्जना में समरसता का कारण भी यही है। वैज्ञानिक खोजों से जहाँ समाज भौतिकवाद की ओर प्रवृत्त हुआ है, सामाजिक मूल्य भी तीव्रता से परिवर्तित हो रहे हैं, वहाँ ललित कलाओं का दायित्व और भी बढ़ जाता है। समाज के अगुआ माने जाने वाले कलाकार, चिंतक मौलिक रचना के माध्यम से एक सुखद/सुवासित वातावरण सृजित कर सकते हैं, पर ऐसे परिवेश के परिप्रेक्ष्य में स्वस्थ व संतुलित समीक्षाओं की भूमिका अहम् है। इसके लिए स्वयं कलाकारों तथा कला प्रेमियों को परिवर्तित होते सामाजिक, सांस्कृतिक व सौंदर्यशास्त्रीय मूल्य, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा नवीन अन्वेषणों से साक्षात्कार करते रहना होगा। आज ऐसे पत्र–पत्रिकाओं का भी अभाव है जो हमारे अतीत व वर्तमान से परिचित कराते हुए भविष्य का दिशा निर्धारण के लिए एक ठोस धरातल दे, हमें अंतर्द्वन्द से बाहर निकाले।

इस परिप्रेक्ष्य में उत्कर्ष प्रतिष्ठान द्वारा किए जा रहे प्रयास के फलस्वरूप "दीर्घा" का प्रवेशांक प्रस्तुत है, जिसमें क्षेत्रीय स्तर पर प्रचलित लोक कलाओं तथा प्रयुक्त प्रतीकों की मान्यताओं, सौंदर्यशास्त्र की नूतन अवधारणाओं, पारंपरिक व अत्याधुनिक मूल्यों की अंतर्संगतियों, अभिव्यक्ति की प्रासंगिकता, आधुनिक कला प्रवृत्तियों आदि पहलुओं पर अमूल्य अनुभवों तथा दर्शन से जिज्ञासुओं का साक्षात्कार कराया जा सकेगा।

यह अंक कला क्षेत्र में स्वस्थ व संतुलित समीक्षाओं तथा मौलिक शोध सामग्रियों से परिपूर्ण एक उपयोगी कला–साहित्य के रूप में अस्तित्व बना पाएगा, आशा है।

– अवधेश मिश्र

रेखांकन– रणवीर सिंह बिष्ट

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अक्टूबर 2000

रेखांकन– ललित मोहन सेन, राज्य ललित कला अकादमी उ.प्र. द्वारा प्रकाशित मोनोग्राफ से

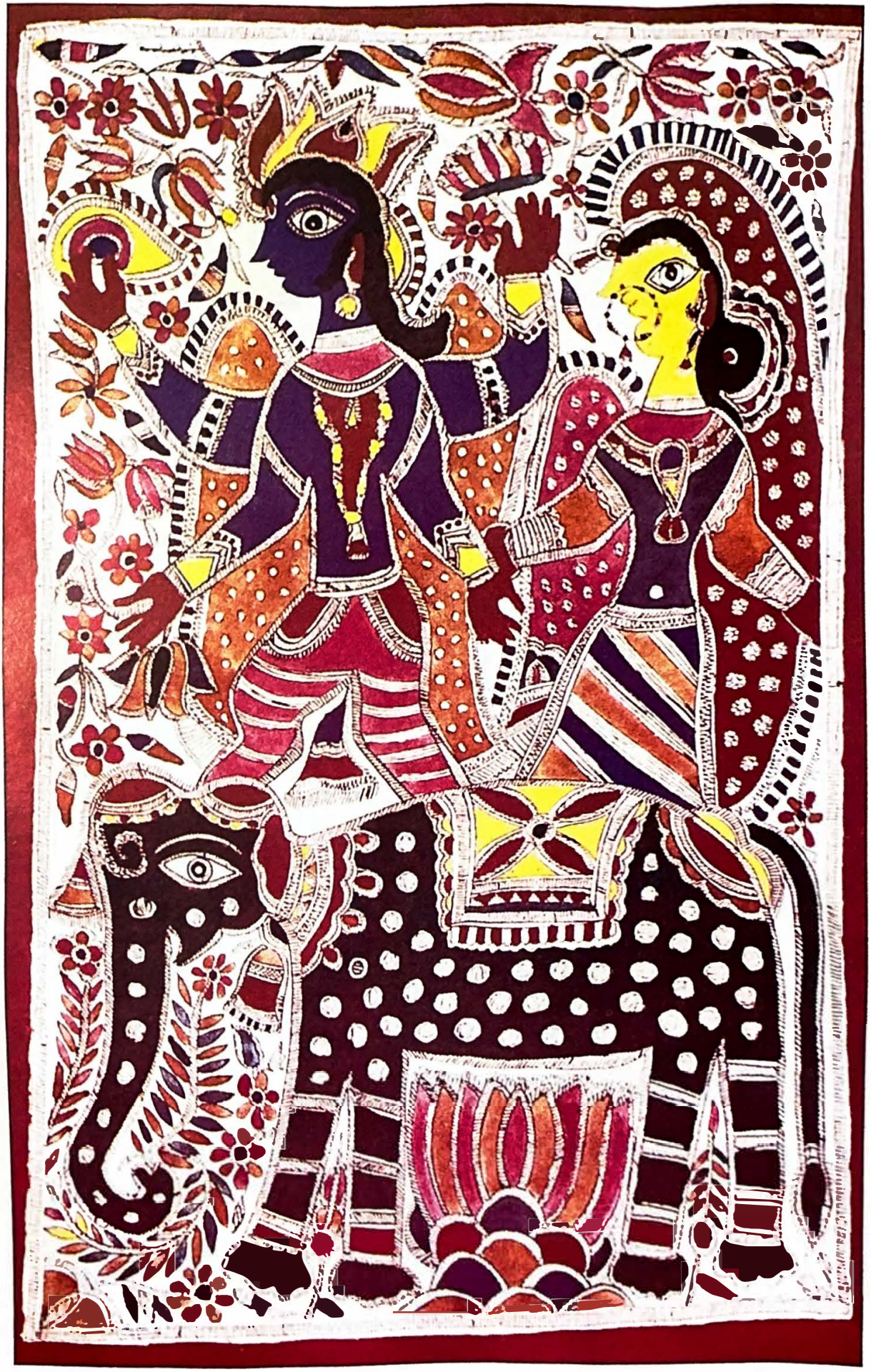

इंद्र व मेनका स्वर्ग–विहार करते हुए, मिथिला लोक कला शैली